

कृषि ऋण की आवश्यकता और महत्व

डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय

असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

भाऊराव देवरस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुद्धी, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। देश की अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करती है। कृषि उत्पादन को बढ़ाने, आधुनिक तकनीकों को अपनाने, बीज, उर्वरक, सिंचाई तथा कृषि यंत्रों की व्यवस्था करने के लिए पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है। परंतु अधिकांश किसान आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में कृषि ऋण किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन जाता है। कृषि ऋण के माध्यम से किसान अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकते हैं तथा कृषि को अधिक लाभकारी बना सकते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में कृषि ऋण की आवश्यकता, उसके महत्व तथा भारतीय कृषि के विकास में उसकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: कृषि ऋण, कृषि विकास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि निवेश, वित्तीय सहायता

प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि न केवल खाद्यान्न उत्पादन का प्रमुख स्रोत है, बल्कि यह उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध कराती है तथा देश की बड़ी आबादी को रोजगार प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर करती है। इस कारण कृषि क्षेत्र का विकास देश की समग्र आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक माना जाता है। कृषि उत्पादन की प्रक्रिया में अनेक प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है। भूमि, श्रम और पूंजी के बिना कृषि उत्पादन संभव नहीं है। इनमें पूंजी का महत्व विशेष रूप से अधिक है क्योंकि आधुनिक कृषि में उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई उपकरण तथा कृषि मशीनरी का उपयोग बढ़ता जा रहा है। परंतु अधिकांश किसान छोटे और सीमांत होते हैं, जिनकी आय सीमित होती है और वे अपने संसाधनों से इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में कृषि ऋण किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन जाता है। कृषि ऋण के माध्यम से किसान उत्पादन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं तथा कृषि को अधिक उत्पादक और लाभकारी बना सकते हैं। कई अर्थशास्त्रियों का मत है कि कृषि क्षेत्र के विकास के लिए सस्ती और सुलभ ऋण व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है (मिश्रा एवं पुरी, 2008)। इसलिए कृषि ऋण व्यवस्था को ग्रामीण विकास की एक महत्वपूर्ण आधारशिला माना जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृषि ऋण की अवधारणा, स्वरूप तथा उसके विभिन्न आयामों का समग्र अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत कृषि ऋण की मूल अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि भारतीय कृषि व्यवस्था में इसकी आवश्यकता क्यों उत्पन्न होती है। साथ ही कृषि उत्पादन, कृषि निवेश तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि ऋण की भूमिका और उसके महत्व का विश्लेषण करना भी इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में कृषि ऋण के विभिन्न प्रकारों तथा उनके प्रमुख स्रोतों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया गया है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि किसानों को किन-किन माध्यमों से ऋण उपलब्ध होता है। साथ ही कृषि ऋण प्रणाली से जुड़ी प्रमुख समस्याओं जैसे ऋण की अपर्याप्त उपलब्धता, उच्च ब्याज दर, जटिल प्रक्रियाएँ तथा किसानों की निर्भरता आदि का विश्लेषण भी किया गया है। अंततः इन समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त उपायों एवं सुझावों को प्रस्तुत करना भी इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इस शोध-पत्र के लिए विभिन्न अर्थशास्त्रियों की पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी प्रकाशनों तथा आर्थिक सर्वेक्षणों का अध्ययन किया गया है। उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के आधार पर कृषि ऋण की आवश्यकता, महत्व तथा उससे संबंधित समस्याओं का विवेचन किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

परिकल्पना (Hypothesis)

किसी भी शोध अध्ययन में परिकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत एक संभावित धारणा होती है, जिसकी सत्यता का परीक्षण अध्ययन के माध्यम से किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में कृषि ऋण और कृषि विकास के संबंध को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गई हैं—

मुख्य परिकल्पना (Main Hypothesis):

H₁: कृषि ऋण की उपलब्धता में वृद्धि होने से कृषि उत्पादन और किसानों की आय में सकारात्मक वृद्धि होती है।

शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis):

H₀: कृषि ऋण की उपलब्धता का कृषि उत्पादन और किसानों की आय पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।

सहायक परिकल्पनाएँ (Sub-Hypotheses):

1. कृषि ऋण किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने में सहायता प्रदान करता है।
2. संस्थागत स्रोतों से प्राप्त कृषि ऋण किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है।
3. कृषि ऋण की उपलब्धता ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को प्रोत्साहित करती है।
4. कृषि ऋण की कमी कृषि उत्पादन में बाधा उत्पन्न करती है।

इन परिकल्पनाओं के आधार पर कृषि ऋण की आवश्यकता और महत्व का विश्लेषण किया गया है।

कृषि ऋण का अर्थ

कृषि ऋण से आशय उस वित्तीय सहायता से है जो किसानों को कृषि उत्पादन तथा उससे संबंधित कार्यों के लिए प्रदान की जाती है। यह ऋण किसानों को बीज, उर्वरक, कीटनाशक, कृषि उपकरण, सिंचाई साधनों तथा अन्य कृषि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दिया जाता है। कृषि ऋण का उद्देश्य किसानों को आवश्यक पूंजी उपलब्ध कराना है ताकि वे कृषि उत्पादन को बनाए रख सकें तथा उसे बढ़ा सकें। कृषि ऋण अल्पकालीन, मध्यकालीन और दीर्घकालीन रूपों में प्रदान किया जाता है। अल्पकालीन ऋण सामान्यतः एक फसल चक्र के लिए दिया जाता है, जबकि मध्यकालीन और दीर्घकालीन ऋण कृषि उपकरणों की खरीद, भूमि सुधार तथा सिंचाई परियोजनाओं के लिए उपयोग किए जाते हैं (दत्त एवं सुंदरम, 2009)। इस प्रकार कृषि ऋण कृषि उत्पादन की निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कृषि ऋण की विशेषताएँ

कृषि ऋण की कुछ विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं जो इसे अन्य प्रकार के ऋणों से अलग बनाती हैं। सबसे पहली विशेषता यह है कि कृषि ऋण मुख्यतः उत्पादन आधारित होता है। इसका उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ाना तथा किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना होता है।

दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इसकी मौसमी प्रकृति है। कृषि कार्य मौसम पर निर्भर होते हैं, इसलिए किसानों को ऋण की आवश्यकता भी

विशेष मौसमों में अधिक होती है, जैसे बुवाई के समय या फसल कटाई के समय। तीसरी विशेषता यह है कि कृषि ऋण का अधिकांश भाग छोटे और सीमांत किसानों को प्रदान किया जाता है, जिनकी आय सीमित होती है।

इसके अतिरिक्त कृषि क्षेत्र में प्राकृतिक जोखिम अधिक होने के कारण कृषि ऋण की वसूली में भी कई बार कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। सूखा, बाढ़ या अन्य प्राकृतिक आपदाएँ किसानों की उत्पादन क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं, जिससे ऋण चुकाने में समस्या उत्पन्न हो सकती है (अग्रवाल, 2007)।

कृषि ऋण की आवश्यकता

भारतीय कृषि में कृषि ऋण की आवश्यकता अनेक कारणों से होती है। सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि कृषि उत्पादन के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिनकी व्यवस्था करने के लिए पर्याप्त पूंजी चाहिए। किसानों के पास अपनी बचत सीमित होती है, इसलिए उन्हें बाहरी वित्तीय सहायता की आवश्यकता पड़ती है। कृषि ऋण की आवश्यकता आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए भी होती है। कृषि के आधुनिकीकरण के साथ उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक तथा आधुनिक कृषि यंत्रों का उपयोग बढ़ गया है। इन सभी संसाधनों की खरीद के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है, जिसे कृषि ऋण के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सिंचाई सुविधाओं के विकास के लिए भी कृषि ऋण आवश्यक होता है। ट्यूबवेल, पंपसेट तथा अन्य सिंचाई साधनों की स्थापना के लिए पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है। कृषि ऋण किसानों को इन सुविधाओं को विकसित करने में सहायता प्रदान करता है। प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में भी कृषि ऋण का महत्व बढ़ जाता है। सूखा, बाढ़ या कीट प्रकोप के कारण जब फसल नष्ट हो जाती है, तब किसानों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में कृषि ऋण किसानों को पुनः कृषि कार्य प्रारंभ करने में सहायता प्रदान करता है।

कृषि ऋण का महत्व

कृषि ऋण का महत्व केवल किसानों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास से जुड़ा हुआ है। कृषि ऋण किसानों को उत्पादन के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराता है, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। जब उत्पादन बढ़ता है तो खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ती है और देश की खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है। कृषि ऋण कृषि के आधुनिकीकरण को भी प्रोत्साहित करता है। आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए किसानों को पूंजी की आवश्यकता होती है, जो कृषि ऋण के माध्यम से प्राप्त होती है। इससे कृषि अधिक उत्पादक और लाभकारी बनती है।

कृषि ऋण के प्रकार

कृषि ऋण को सामान्यतः तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जाता है। **पहला है अल्पकालीन ऋण**, जो सामान्यतः एक वर्ष की अवधि के लिए दिया जाता है। इसका उपयोग बीज, उर्वरक, कीटनाशक तथा श्रम लागत जैसे कृषि उत्पादन खर्चों के लिए किया जाता है। **दूसरा प्रकार मध्यकालीन ऋण** का होता है, जिसकी अवधि सामान्यतः एक से पाँच वर्ष तक होती है। इसका उपयोग कृषि उपकरण खरीदने, पशु खरीदने या छोटे स्तर पर भूमि सुधार करने के लिए किया जाता है। **तीसरा प्रकार दीर्घकालीन ऋण** का होता है, जिसकी अवधि पाँच वर्ष से अधिक होती है। इसका उपयोग भूमि सुधार, सिंचाई परियोजनाओं, ट्रैक्टर खरीदने तथा कृषि संरचनाओं के निर्माण के लिए किया जाता है (मिश्रा एवं पुरी, 2008)।

इसके अतिरिक्त कृषि ऋण किसानों की आय में वृद्धि करने में भी सहायक होता है। जब किसान बेहतर संसाधनों का उपयोग करते हैं तो उनकी उत्पादकता बढ़ती है और उन्हें अधिक आय प्राप्त होती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं तथा रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं।

कृषि ऋण का एक महत्वपूर्ण लाभ यह भी है कि इससे किसानों की साहूकारों पर निर्भरता कम होती है। पहले किसान अपनी

आवश्यकताओं के लिए स्थानीय साहूकारों से ऊँची ब्याज दर पर ऋण लेते थे, जिससे वे ऋण के जाल में फँस जाते थे। संस्थागत ऋण व्यवस्था के विकास से इस समस्या में काफी कमी आई है (दत्त एवं सुंदरम, 2009)।

कृषि ऋण के स्रोत

कृषि ऋण के स्रोतों को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—गैर-संस्थागत स्रोत और संस्थागत स्रोत। गैर-संस्थागत स्रोतों में साहूकार, व्यापारी, मित्र तथा रिश्तेदार शामिल होते हैं। इन स्रोतों से ऋण प्राप्त करना अपेक्षाकृत आसान होता है, लेकिन इनकी ब्याज दरें सामान्यतः बहुत अधिक होती हैं। संस्थागत स्रोतों में सहकारी बैंक, वाणिज्यिक बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शामिल होते हैं। इन संस्थाओं द्वारा किसानों को अपेक्षाकृत कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है। समय के साथ सरकार ने भी कृषि ऋण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ लागू की हैं ताकि किसानों को सस्ती और सुलभ वित्तीय सहायता प्राप्त हो सके (अग्रवाल, 2007)।

कृषि ऋण से संबंधित समस्याएँ

यद्यपि कृषि ऋण किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी है, फिर भी इससे संबंधित कई समस्याएँ भी देखने को मिलती हैं। सबसे प्रमुख समस्या यह है कि छोटे और सीमांत किसानों को ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। कई बार बैंकिंग प्रक्रियाएँ जटिल होती हैं, जिसके कारण किसान ऋण लेने से हिचकिचाते हैं। दूसरी समस्या ऋण वितरण में असमानता की है। कई बार बड़े किसानों को अधिक ऋण प्राप्त हो जाता है, जबकि छोटे किसानों को पर्याप्त ऋण नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त कई बार ऋण का उपयोग कृषि कार्यों के बजाय अन्य कार्यों में भी किया जाता है, जिससे कृषि उत्पादन पर अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ता। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। कई गाँवों में बैंक शाखाएँ उपलब्ध नहीं होतीं, जिसके कारण किसानों को ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है (दत्त एवं सुंदरम, 2009)।

कृषि ऋण व्यवस्था में सुधार के उपाय

कृषि ऋण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। सबसे पहले ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि किसानों को अपने निकट ही ऋण की सुविधा मिल सके।

दूसरे, छोटे और सीमांत किसानों को ऋण वितरण में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके लिए सरल और पारदर्शी ऋण प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए ताकि किसानों को अनावश्यक कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

इसके अतिरिक्त किसानों को वित्तीय साक्षरता प्रदान करना भी आवश्यक है। यदि किसानों को ऋण के सही उपयोग और समय पर भुगतान के बारे में जानकारी होगी, तो कृषि ऋण व्यवस्था अधिक प्रभावी बन सकती है। कृषि बीमा योजनाओं को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि प्राकृतिक आपदाओं के समय किसानों को सुरक्षा मिल सके (मिश्रा एवं पुरी, 2008)।

परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Discussion)

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृषि ऋण कृषि विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। जिन क्षेत्रों में किसानों को पर्याप्त और समय पर ऋण उपलब्ध हुआ है, वहाँ कृषि उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में ऋण सुविधाएँ सीमित हैं, वहाँ कृषि विकास अपेक्षाकृत धीमा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कृषि ऋण कृषि क्षेत्र के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है। इसलिए आवश्यक है कि कृषि ऋण प्रणाली को अधिक सुदृढ़ और प्रभावी बनाया जाए।

नीतिगत सुझाव (Policy Suggestions)

कृषि ऋण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं—

1. ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।

2. छोटे और सीमांत किसानों को ऋण वितरण में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
3. ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाया जाना चाहिए।
4. किसानों को वित्तीय साक्षरता प्रदान की जानी चाहिए।
5. कृषि बीमा योजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृषि ऋण की अवधारणा, उसकी आवश्यकता तथा भारतीय कृषि के विकास में उसके महत्व का विश्लेषण करना था। अध्ययन के विभिन्न भागों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कृषि ऋण भारतीय कृषि व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। कृषि उत्पादन की प्रक्रिया में पूंजी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और अधिकांश किसान सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण आवश्यक निवेश करने में सक्षम नहीं होते। ऐसी स्थिति में कृषि ऋण किसानों को उत्पादन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायता प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप यह पाया गया कि कृषि ऋण कृषि निवेश को बढ़ाने, आधुनिक तकनीकों को अपनाने तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्नत बीज, उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई साधन तथा कृषि मशीनरी के उपयोग के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिन्हें कृषि ऋण के माध्यम से उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप कृषि की उत्पादकता बढ़ती है और किसानों की आय में भी सुधार होता है। इस प्रकार कृषि ऋण न केवल व्यक्तिगत किसानों के लिए बल्कि सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

अध्ययन में प्रस्तुत परिकल्पनाओं के आधार पर भी यह निष्कर्ष निकलता है कि कृषि ऋण की उपलब्धता और कृषि उत्पादन के बीच सकारात्मक संबंध पाया जाता है। जब किसानों को समय पर और पर्याप्त मात्रा में ऋण प्राप्त होता है, तब वे आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने में सक्षम होते हैं, जिससे उत्पादन और उत्पादकता दोनों में वृद्धि होती है। इस प्रकार मुख्य परिकल्पना (H_1) को अध्ययन के विश्लेषण से समर्थन प्राप्त होता है, जबकि शून्य परिकल्पना (H_0) को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि संस्थागत ऋण व्यवस्था के विकास से किसानों की साहूकारों पर निर्भरता में कमी आई है। सहकारी बैंक, वाणिज्यिक बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक किसानों को अपेक्षाकृत कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। हालांकि, इसके बावजूद कई समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं, जैसे छोटे और सीमांत किसानों को ऋण प्राप्त करने में कठिनाई, ऋण वितरण में असमानता तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं की कमी।

इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि कृषि ऋण व्यवस्था को अधिक प्रभावी, सरल और सुलभ बनाया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग नेटवर्क का विस्तार, ऋण प्रक्रियाओं का सरलीकरण, छोटे और सीमांत किसानों को प्राथमिकता तथा वित्तीय साक्षरता के प्रसार जैसे उपाय कृषि ऋण प्रणाली को अधिक सुदृढ़ बना सकते हैं। साथ ही कृषि बीमा और जोखिम प्रबंधन की व्यवस्थाओं को भी सशक्त करना आवश्यक है, ताकि प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में किसानों को आर्थिक सुरक्षा मिल सके।

अतः समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि कृषि ऋण भारतीय कृषि विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। यदि किसानों को समय पर, पर्याप्त और सस्ती ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, तो न केवल कृषि उत्पादन में वृद्धि संभव है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के समग्र विकास को भी नई दिशा मिल सकती है। इस प्रकार कृषि ऋण व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना देश के आर्थिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :



1. मिश्रा, एस. के. एवं पुरी, वी. के. (2008) भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली: हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
2. दत्त, रूद्र एवं सुंदरम, के.पी.एम. (2009) भारतीय अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली: एस. चंद एंड कंपनी।
3. अग्रवाल, ए. एन. (2007) भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्याएँ. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. भारत सरकार (2008) आर्थिक सर्वेक्षण. नई दिल्ली: वित्त मंत्रालय।